परिवर्तन
PARIVARTAN
समेकित ग्रामीण समुदाय विकास हेतु तक्षशिला की पहल

ग्राम : नरेन्द्रपुर, प्रखंड : जीरादेई
जिला : सिवान, बिहार
दूरभाष : +91 8434170118

तक्षशिला

अंक – चौदह, दिसम्बर 2018 – मार्च 2019

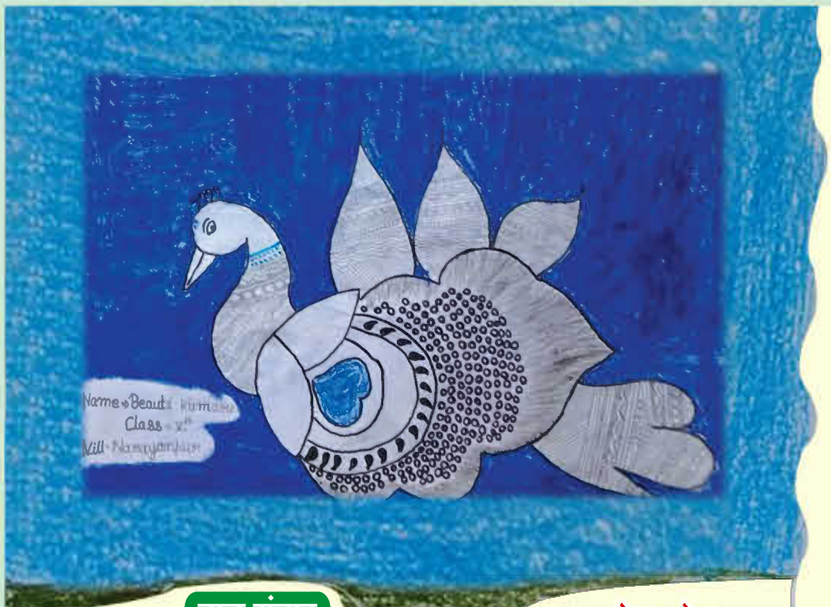

आपबीती

मेरी नानी मुझे बहुत प्यार करती है और हमको रोज कहानी सुनाती है। एक दिन मेरी नानी बिमार हो गई तो मुझे उस दिन कहानी नही सुनाई, तब मुझे नींद नही आ रही थी, कैसे भी बहुत देर के बाद नींद आई नानी की तबियत धीरे–धीरे ठीक होने लगी। कुछ दिन बाद नानी पूरी तरह से ठीक हो गई, उसके बाद जब मै नानी से बोली नानी कोई कहानी सुनाओ ना, तो नानी ने एक भूत की कहानी सुनाई, उस दिन से मुझे बहुत डर लगने लगा। मै कहानी सुनते–सुनते नानी के पास मे ही सो गई, सुबह हुई तो नानी मुझे जगायी और मुझे एक कहानी की किताब पढ़ने के लिए दी।

खुशबु कुमारी,
घर गोंठी, कक्षा –6

बाल संवाद

प्यारे दोस्तो,

मै हूँ चहकने की ललक। इस अंक 14 मे मेरे बाल लेखको ने मेरे लिए मेरे बारे मे बहुत अच्छा लिखा है। इससे पता चलता है कि मूझसे मिलने के बाद इन बाल लेखको मे काफी कुछ बदलाव हुआ है। इसवार तो मेरे प्यारें लेखकों ने मुझे खुद से तैयार किये है। सर्व प्रथम 2014 मे मुझे प्रकाशित किया गया जिसमे मेरे बाल लेखको ने अपनी रचना को प्रदर्शित किये। उस दरमियाँ उन्हे बेहद खुशी हुई और लगातार मेरे लिए अपनी रचना लिखते रहे। आशा करता हूँ की आगे भी ऐसे ही अच्छा लिखेंगे। यह परिवर्तन बाल अखबार सभी बच्चों का अखबार है। जिसमें बच्चें अपनी–अपनी कला को दिखाने की कोशिश करते है।

आपका साथी मैं
(चहकने की ललक)

करने को कुछ

इस खेल को ध्यान से देखो। तुम्हे कम से कम चालो में हरी व नीली गोटियो की जगह को आपस में बदलना है। खाली में किसी भी खाने की गोली को उठाकर चल सकते हो।

लक्ष्मी कुमारी, कक्षा–7, सिकिया

खुले से प्रश्न

- कथा तुम एक ऐसी संख्या बता सकते हो जो अपने अंको के जोड़ से दुगनी हो?
- अगर तीन दिन पहले शुक्रवार के पहले वाला दिन था तो परसो कौन सा दिन होग?

शुभम कुमार,
बाल पथिक, कक्षा–8, बड़हुलिया

कविता

कदम्ब का पेड़

एक कदम्ब का पेड़ था,
पेड बहुत ही मोटा था।
कदम्ब का फल थोडा खट्टा
खाने में लगता है खट्टा
कदम्ब का फल का बनता अचार
खाकर इसे करो विचार
देखने मे है, गोल–मटोल
बच्चे खाकर करे शोर
रंग है, इसका हरा–पीला
थोड़ा खट्टा और रसीला।

ऋषिकेश,
कक्षा 5, घर संथू

शिक्षकों की कलम से कविता

स्वास्थ्य का प्रतिक है खेल,
सब पर बैठता इसका मेल।
बच्चे बुढ़े या हो जवान,
सभी खेलते देकर ध्यान।
कुछ नया और कुछ पुराना
इस खेल से पहचान बना।
जो समझ गया वह बन गया महान,
जो ना समझा वह है नादान।
कुछ खेल है, मुशकिल तो कुछ है आसान
इस खेल पर हमे हे नाज।
इस खेल मे है दम,
जो कभी ना होगा कम।
चाहे बट जाये जितने खण्ड,
सभी बच्चे रह गये दंग।
भर लाया है यह उमग।

विक्की बर्नवाल, सामुदायिक युवा नेत्रित्वकर्ता उमंग, ग्राम बलिया

हमार बोली

हमार नाम कस्तूरी कुमारी, घर संथू है। हमारा गाँव मे महाशिव रात्री के दिन बहुत भारी मेला लगेला, हमारा गाँव के पुरब मे शिव जी कि मंदिर बा, और बहुत बड़ा पोखरा भी बाटे, तेरस, प्रदोष के दिन भी बहुत लोग शिव जी के जल चढाने मंदिर मे आवेला, लकिन महाशिव रात्री के दिन मेला लगेला और 1 महिना तक लगातार मेला रहेला हमार गाँव के लोग कहेला कि बहुत ज्यादा दिन से इहाँ मेला लागेला। हमारा स्कूल मे भी छुट्टी रहेला। कवनो बच्चा पढ़े ना जाले, सब लोग मेला घुमेले झुल्ला, सरकश देख, मौत के कुआ इ सब भी मेला मे रहला।

कस्तूरी कुमारी, कक्षा 5,
ग्राम संथू

चुटकुला

पत्नीः आप बहुत भोले है, आपको कोई भी बेवकूफ बना देता है।

पतिः शुरूआत तो तेरे बाप ने की थी।

पुतुल कुमारी,
धर्मपुर, कक्षा–5

चुटकुला

यमराजः बेटी बता कहाँ जायेगी नरक मे या स्वर्ग में?

लड़कीः धरती से बस मेरा मोबाइल और चार्जर मंगा दो मै कही भी रह लूँगी।

आयुश कुमार,
घर गोंठी, कक्षा–2

कहानी

मेले की तैयारी

मेरे घर से मेरी नानी का घर काफी दुर है, वहाँ महाशिवरात्री को बहुत भारी मेला लगता है, सभी लोग मेले की तैयारी शुरू कर देते है, जहाँ मेला लगता है, वहाँ शिवजी का मंदिर है, उसके बगल मे ही बहुत सारा खाली जगह है, वही पर मेला लगता है। सभी गाँव के लोग साफ–सफाई करते है, मंदिर को भी रगाई–पोताई करते है, फिर जब मेला लगता है, उस दिन कोई बच्चे पढ़ने नही जाते है, स्कूल मे छुट्टी रहती है, सभी झुला झुलते है, सरकस भी देखने में बहुत मजा आता है, चारो तरफ शोर–गुल रहता है। तरह–तरह के खिलौने भी मिलते है मैने एक जहाज खरीदा जो रिमोर्ट पर उड़ती है।

नीरज कुमार,
कक्षा–6, गोंती

पहेली

- ऐसी कौन–सी चीज है, जो खाया भी जाता है, और पहना भी जाता है। — लोग
- दो पहिए की एक सवारी बिना पेडोल चले यह गाड़ी भागे–पीछे पैर घुमाओ बस भागे ही बदले जाओ। — साईकिल
- पाँच अक्षर का मेरा नाम उल्टा–सीधा एक समान भारत की भाषा का नाम बच्चों बताओ मेरा नाम। — मलयालम

विकास कुमार राय,
घर सीकियाँ, कक्षा 8

निबंध

गाँव की कठिनाई

हमारे गाँव मे बहुत सी कठिनाईयाँ होती है, जैसे–यहाँ पर सबके घरों मे शौचालय की सुविधा नही है। यहाँ पर लोग खेतो मे शौच करने जाते है। यहाँ सड़क बहुत ही खराब है नाली की सुविधा नही है, लोग अपने–अपने घरों के सामने नाला का पानी बहाते है। कुछ लोग ऐसे भी है, जो सड़क पर नाला का पानी बहाते है, और इसी कारण से सड़क पर पुरा कीचड़ फैल जाता है, लोग बहुत बार फिसल जाते है, हमारे गाँव मे सरकारी स्कूल है, लेकिन वहा सुचारू रूप से पढ़ाई नही होती है, और प्राइवेट स्कूल काफी दूर है।

अतुल कुमार, कक्षा–6, संचू

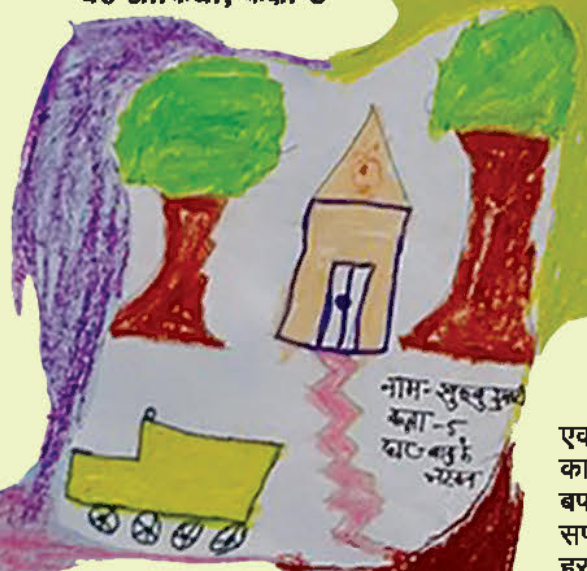

पहेली

नई सदी का नया खिलौना
हर कोई चाहे इसको लेना
बिना तार के मै जुड जॉऊ
इससे उससे बात कराऊँ। — मोबाइल

आदि कटे तो बनता हूँ जल
मध्य कटे तो बनता हूँ काल
अंत कटे तो करता हूँ कान
बुझो मेरा नाम। — काजल

प हटे तो लगता है कोड़ा
नमक साथ मे तीखा थोडा
खाने मे यह सबको भाय
खाते–खाते मन हरचाये। — पकौड़ा

रिमा कुमारी, कक्षा–5, वर्मपुर

अपनी बात

दाल–रोटी

मेरा नाम रानी कुमारी है, मुझे दाल–रोटी खाना बहुत अच्छा लगता है। मेरे घर मे बहुत सारे लोग है, मेरा परिवार बहुत बड़ा है, एक दिन मेरे घर मे दाल–रोटी बना था और सभी लोग खाये जब मै दोपहर के समय स्कूल से घर आई तो खाना खत्म हो गया था, मेरी माँ बोली बेटी खाना तो खत्म हो गया है, दुकान से कुछ मंगवा दे खाने के लिए। मै बोली बहुत जोर की भुख लगी है, मुझे दाल–रोटी बनाई फिर गरम–गरम दाल–रोटी खाकर सो गई और शाम के समय कोचिग करने के लिए गयी।

रानी कुमारी,
कक्षा –7, घर नारायणपुर

बचपन की यादें

बचपन मे हम गुल्ली–डंडा खेलते थे और पेड पर चढ़ते थे और पुरा दिन हम और हमारे दोस्त लोग मिल कर लगातार 3–4 घंटा खेलते रहते थे, उसके बाद जब घर आते थे, तो मेरी माँ मारती थी, और मुझे पढ़ने के लिए कहती थी, मुझे पढ़ाई मे थोड़ा भी मन नही लगता था, जब पढ़ने बैठता था तो मुझे खेलने का मन करता और माँ के डर से किताब लेकर पढ़ता रहता था, जब सुबह होता था तब थोड़ा खेलकर फिर नहाकर स्कुल जाते और लंच के समय फूटबॉल चिका इत्यादि खेल खेलते थे।

शिवम कुमार,
घरः संचू
कक्षा – 7

आने वाला थीम

1. बैल गाड़ी
2. नाव की सवारी
3. हाथी आया गाँव में
4. सुनसान बगीचे

खुले से प्रश्न

एक दिन सारा ने सोचा कि अगर चीजों का रंग कुछ इस तरह बदल जाए कि बर्फ का रंग हो जाए लाल, खून का सफेद? घास का काला, काजल का हरा, आकास का पीला तो फिर पके आम का रंग क्या होगा।

रिया सिंह (बाल पथिक)
घर– बडहुलिया, कक्षा 8

लेख

कदम्ब का पेड

कदम्ब का पेड़ बहुत ही लम्बा और कमजोर होता है, कदम्ब का फल थोड़ा खट्टा और थोड़ा मीठा होता है, उसकी पतियाँ कुछ हरी और कुछ पीली होती है। कदम्ब का चटनी एंव कदम्ब का अचार बनाया जात है, मेरी माँ कदम्ब का सब्जी भी बनाती है, उसकी सब्जी बहुत स्वादिष्ट होती है, मेरे द्वार पर कदम्ब का पेड है, उस पर फल लग गया है बहुत सारे बच्चे फल तोडने के लिए आते है, जब मै सुबह मे उठता हुँ और द्वार पर जाता हूँ तो कदम्ब का फल गिरा रहता है उसको धोकर खाता हूँ और अपने दोस्तो को भी खिलाता हूँ।

बिट्टु कुमार,
कक्षा– 7, घर नरायणपुर